IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 4.819
Volume 11, Issue 1, November 2019

सामाजिक और आत्मिक संघर्ष की कहानी : हिंदी की लम्बी कविता

डॉ. अजय कुमार बिन्द

असि. प्रो. राजकीय महाविद्यालय नानौता सहारनपुर

Email: drajaybind@gmail.com

आधुनिक हिन्दी साहित्य में एक तरह से महाकाव्यों, खण्डकाव्यों का अभाव दिखाई देता है। प्रिय प्रवास, साकेत, कामायनी, कला और बूढा चाँद जैसी इक्का दुक्का कृतियों के अतिरिक्त महाकाव्यों की चर्चा अब समाप्त प्राय हो गई है। महाकाव्यों का स्थान एक नए प्रकार का काव्य-रूप लम्बी कविताओं ने ले लिया है। निराला की **'राम की शक्ति पूजा'**, **'सरोज स्मृति**, **'कुकुरमुत्ता'**, **'बन बेला'**, **'तुलसीदास'**, **मुक्तिबोध** की **'अंधेरे में'**, **'चाँद का मुँह टेढ़ा है'**, **अज्ञेय** की **'असाध्यवीणा'**, **त्रिलोचन** की **'नगई महरा'**, **नागार्जुन** की **'हरिजन गाथा'**, **धूमिल** की **'मोचीराम'**, **रघुवीर सहाय** की **'आत्महत्या के विरुद्ध'**, **सर्वेश्वरदयाल सक्सेना** की **'कुआनो नदी'**, **केदारनाथ सिंह** की **'बाघ'**, **लीलाधर जगूड़ी** की **'बलदेव खटिक'** आदि कविताओं की उठान और उदात्त महाकाव्यात्मक हैं, लेकिन अपनी संवेदना और रचना - विधान में महाकाव्य के मानकों से इसकी तुलना नहीं की जा सकती।